classmate
Date 12/05/20
Page 1

Sub:- Philosophy
Class:- B.A, Part-II (Hons)
Paper:- IV

लाइबनीज का पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम (अन्तिम भाग)

Doctrine of Pre-established Harmony of Leibniz (Final Part)

⟹ पिछले भाग में हमलोगों ने चर्चा की के पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम क्या है? अब हम लोग उससे आगे कि व्याख्या करेंगे।

लाइबनीज का पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम अवसरवादियों के सिद्धान्त से एक विशेष अर्थ में भिन्न है। अवसरवादियों के अनुसार ईश्वर प्रकृति एवं प्राकृतिक घटनाओं में बार-बार हस्तक्षेप करता है। यह सिद्धान्त मानता है कि ईश्वर ठीक उसी रूप में अकसर प्राकृतिक क्रियाओं में हस्तक्षेप करता है जिस प्रकार एक घड़ीसाज (watch maker) को घड़ियों में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी होने पर बार-बार उसे सुधारना या मिलाना पड़ता है। परन्तु लाइबनीज को यह मत मान्य नहीं है। वे यह मानते हैं कि ईश्वर एक अत्यन्त ही चतुर एवं कुशल निर्माता है जिसने प्रारम्भ में ही निर्धारित

चिद्बिन्दुओं को एक सामन्जस्य में बांध दिया है तथा जिसमें कभी भी कोई गड़बड़ी नहीं हो सकती और सम्पूर्ण प्रकृति एवं प्राकृतिक घटनायें उस पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम के अनुकूल क्रियाशील रहती है। ~~ईश्वर~~ लाइबनीज का कथन है कि ईश्वर विश्व की क्रियाओं में बार-बार तो क्या कभी भी हस्तक्षेप नहीं करता। अवसरवादियों के अनुसार Newton एवं उनके अनुयायियों के अनुसार ईश्वर का विश्व में हस्तक्षेप नितान्त आवश्यक है अन्यथा विश्व रूपी घड़ी अपनी क्रियाएँ बन्द कर सकती है। पर लाइबनीज के अनुसार यह मत पूर्णतः अमान्य है क्योंकि वह एक अद्वितीय निर्माता है जिसने एक ऐसे नियम की रचना आरम्भ में ही कर दी है कि उसे विश्व की क्रियाओं में हस्तक्षेप की आवश्यकता ही नहीं होती है।

मूल्यांकन ⇒ इसके विरोध में सबसे पहली बात यह कही जा सकती है कि पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम लाइबनीज की एक व्यक्तिगत मान्यता है जिसे उन्होंने अपनी कल्पना के आधार पर खोजा है क्योंकि वे उसका कोई तार्किक आधार देने में असमर्थ है। वे यह प्रमाणित नहीं कर सकते कि यथार्थ में ईश्वर ने चिद्बिन्दुओं के बीच सामन्जस्य

की स्थापना हेतु एक पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम की रचना की है। मान्यता सिर्फ मान्यता हो सकती है, किसी बात का कोई प्रमाणिक आधार नहीं। मान्यताओं का दर्शन में कोई मूल्य नहीं यदि बौद्धिक दृष्टि से वह प्रमाणिक सिद्ध नहीं किया जा सके।

तर्क के लिए यदि सामन्जस्य नियम की सत्यता को स्वीकार कर भी लिया जाय तो इतना तो स्पष्ट है कि यह एक बाह्य आरोपित सामन्जस्य है। अतः यदि लाइबनीज के विचारों को मान लिया जाय तो हमारे सामने दो बातें स्पष्ट हो जाती है। पहली यह कि चिद्बिन्दु अपने स्वरूप में छिद्ररहित है और दूसरी यह कि उनके बीच का आपसी सामन्जस्य बाह्य है। अब यदि चिद्बिन्दु छिद्ररहित है और संसार की सारी वस्तुओं का एक मात्र रचनात्मक तत्व तो यह भी मानना पड़ेगा कि लाइबनीज स्वयं भी इन्हीं छिद्ररहित चिद्बिन्दुओं से निर्मित है तो यह पूछा जा सकता है कि उन्हें इस बाह्य नियम का ज्ञान किस प्रकार होता है? इस स्थिति में हमारे समक्ष दो ही सम्भावनाएँ रह जाती है। पहली कि इस सामन्जस्य नियम को बाह्य नहीं माना जाय या दूसरी यह कि चिद्बिन्दुओं को छिद्ररहित नहीं कहा जाय।

पर हम देखते हैं कि लाइबनीज एक साथ ही इन दोनों विरोधी विकल्पों को स्वीकार करते हैं। परिणाम स्वरूप उनका विचार आत्मविरोधी सिद्ध होता है।

इस नियम के विरोध में एक बात यह भी कही जा सकती है कि यह नियम लाइबनीज की एक व्यक्तिगत मान्यता है जिसे न तो सिद्ध किया जाना सम्भव है और न असिद्ध करना। इसे सिद्ध या असिद्ध करने के लिए ईश्वर का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि तभी यह बात भी जानी जा सकती है कि वस्तुतः ईश्वर ने किसी ऐसे नियम की रचना की है अथवा नहीं। यदि यह मान भी लिया जाय कि ईश्वर विश्वव्यापी है तब भी इससे समस्या का समाधान नहीं होता। क्योंकि हम स्वयं चिद्रहित हैं और ईश्वर भी क्योंकि वह परम चिद्बिन्दु है, अतः उसका ज्ञान इस स्थिति में सम्भव नहीं।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि ईश्वरीय श्रेष्ठता को प्रमाणित करने की दृष्टि से लाइबनीज ने ईश्वर को अन्य सारे चिद्बिन्दुओं का ~~निर्~~ निर्माता कहा है, पर यदि इस ~~बा~~ बात को मान लिया

जाय तो फिर चिद्‌बिन्दुओं को असीम नहीं माना जा सकता जैसा कि लाइबनीज ने माना है। क्योंकि कोई भी वस्तु यदि निर्मित है तो कम-से-कम अपने निर्माण के लिए निर्माता पर आश्रित कही जायगी और इस दशा में उसकी असीमता का प्रश्न ही नहीं रह जाता। दूसरे शब्दों में यदि लाइबनीज चिद्‌बिन्दुओं को नित्य और आत्मनिर्भर घोषित करना चाहते है तो ईश्वर को इनका निर्माता कहलाना असंगत है। स्पष्ट है कि लाइबनीज स्वेच्छा से आत्मविरोधी हो जाते है।

उपरोक्त असंगतियो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लाइबनीज का सिद्धान्त भले ही ईश्वर भक्तों के लिए मान्य हो, पर तर्क की दृष्टि से हमारी बुद्धि को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। यह मात्र एक मान्यता है।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.